- **स्तोत्र काव्य-** श्री कामाक्षीमातृका स्तोत्र, श्री मीनाक्षीसुप्रभातम्

18. श्रीधरभास्कर वर्णेकर

श्रीधरभास्कर वर्णेकर का जन्म 31 जुलाई 1918 महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ । कांची पीठ के शंकराचार्य ने प्रज्ञा भारती की उपाधि से इनको विभूषित किया इन्होंने **अर्वाचीन संस्कृत साहित्य** नाम से मराठी में शोध प्रबंध लिखा और **संस्कृत भवितव्यम्** पत्रिका का संपादन किया इन्हें **रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी** सम्मान भी मिला ।

कृतियाँ-

- **लघु काव्य-** श्रामगीता 118 पद्य ।
- इनका छत्रपति शिवाजी के चरित्र पर निर्मित महाकाव्य **श्री शिवराज्योदय** (68) सर्गात्मक है ।
- **वात्सल्यरसायनम्** इस काव्य का दूसरा नाम (श्रीकृष्णबाललीला शतकम्) है ।

उपाधि- प्रज्ञा भारती ।

॥काव्यशास्त्र॥

साहित्यशास्त्र के सम्प्रदाय-

(1) रससम्प्रदाय- भरतमुनि। (300 ई.पू.)

रचना- नाट्यशास्त्र (36 अध्याय)।

रस सिद्धान्त-

रस संप्रदाय के मुख्य आचार्य भरत मुनि हैं । रस के विषय में सर्वप्रथम विवेचन **"नाट्यशास्त्र"** में मिलता है । जिन्होंने नाट्यरस का ही मुख्यतः विश्लेषण किया और उस विवरण को अवान्तर आचार्यों ने काव्यरस के लिए भी प्रामाणिक माना। यह सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है। भरतमुनि के रससिद्धान्त के व्याख्याकार के रूप में - **1. भट्टनायक, 2. भट्टलोल्लट, 3. शङ्कुक, 4. अभिनवगुप्त, 5. विश्वनाथ** ये पाँच आचार्य प्रसिद्ध हैं।

रस का प्रमुख सूत्र-

''विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।'' (ना.शा.)

यह प्रसिद्ध रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है ।

रससम्प्रदाय के अन्य प्रमुख प्रवर्तकाचार्य-

"भोजराज, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय"।

(2) अलङ्कारसम्प्रदाय- भामह (700ई.)

रचना- काव्यालंकार (भामहालंकार 12 परिच्छेद)।

अलङ्कार सिद्धान्त-

रस सम्प्रदाय के बाद इसका दूसरा स्थान है। अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्य भामह हैं। इसके अन्तर्गत **'भामह विवरण'** के निर्माता **'उद्भट'** और उनके बाद - **दण्डी, रुद्रट** आदि तथा पश्चाद्वर्ती - **प्रतिहारेन्दुराज, जयदेव, अप्पयदीक्षित** आदि अनेक आचार्य आते हैं ।'अप्पयदीक्षित' की **'परिमल'** टीका सुप्रसिद्ध है। इस मत में अलंका को ही काव्य की आत्मा माना जाता है। इस शास्त्र के इतिहास में यही संप्रदाय प्राचीनतम तथा व्यापक प्रभावपूर्ण अंगीकृत किया जाता है। अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं किन्तु उसे प्रधनता नहीं देते हैं। इनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्व अलङ्कार ही है। अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना उष्णविहीन अग्नि की कल्पना के सदृश है -

"अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती।।''

(चन्द्रालोक-जयदेव)

अलङ्कारसम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।

रसवदलङ्कार-

1. रसवत्, 2. प्रेय, 3. ऊर्जस्विन्, 4. समाहित।

ये चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं। **भामह** और **दण्डी** दोनों ने इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही इसका अन्तर्भाव किया है-

''रसवद्दर्शितस्पष्टश्रृंगारादिरसं यथा।'' (भामह, काव्यालङ्कार 3.6)

''मधुरे रसवद्वापि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।'' (दण्डी, काव्यादर्श 3.51)

3. रीतिसम्प्रदाय- वामन। (800 ई.)

रचना- काव्यालंकारसूत्रवृत्ति (5 अधिकरण)।

रीति सिद्धान्त-

रीति सम्प्रदाय आचार्य वामन (9वीं शती) द्वारा प्रवर्तित एक काव्य-सम्प्रदाय है जो रीति को काव्य की आत्मा मानता है। यद्यपि संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' एक व्यापक अर्थ धारण करने वाला शब्द है। लक्षणग्रंथों में प्रयुक्त 'रीति' शब्द का अर्थ ढंग, शैली, प्रकार, मार्ग तथा प्रणाली है। 'काव्य रीति' से अभिप्राय मोटे तौर पर काव्य रचना की शैली से है। रीतितत्व काव्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रगति, पद्धति, प्रणाली या मार्ग है। परन्तु वर्तमान समय में 'शैली' (स्टाइल) के समानार्थी के रूप में यह अधिक समाहृत है। आचार्य वामन ने रीति सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा की है। उन्होंने काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में 'रीति' को काव्य की आत्मा घोषित किया है। उनके अनुसार 'पदों की विशिष्ट रचना ही रीति है' (**विशिष्टपदरचना रीतिः**)। विशिष्ट शब्द को स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं - **विशेषो गुणात्मा।** वामन ने गुण को विशेष महत्व दिया है। रीति काव्य की आत्मा है और गुण रीति के कारणभूत वैशिष्ठ्य की आत्मा है। रीति शब्द और अर्थ के आश्रित रचना चमत्कार का नाम है जो माधुर्य, ओज और प्रसाद गुणों के द्वारा चित्र को द्रवित, दीप्त और परिव्याप्त करती हुयी रस दशा तक पहुँचाती है।

काव्य में रीति का विशेष महत्त्व है। रीति के अन्य परिभाषाकार कहते है कि काव्य में रीति पदों के संगठन से रस को प्रकाशित करने में सहायक

होती है। इस प्रकार रीति का काव्य में वही स्थान है जो शरीर में आंगिक संगठन का है। जिस प्रकार अवयवों का उचित सन्निवेश शरीर के सौन्दर्य को बढाता है, शरीर को उपकृत करता है उसी प्रकार वर्णों का यथास्थान प्रयोग शब्द रूपी शरीर और अर्थ रूपी आत्मा के लिए विशेष उपकारक है।

आचार्य वामन ने रीति के तीन भेद तय किये हैं– **वैदर्भी रीति, गौडी रीति, पाञ्चाली रीति।** आचार्य दण्डी केवल दो ही भेद मानते हैं, वे पाञ्चाली का समर्थन नहीं करते। दण्डी, 'रीति' के स्थान पर ''मार्ग' शब्द का प्रयोग करते हैं। परवर्ती आचार्यो ने रीति के तीन से भी अधिक भेद स्थापित किये हैं। लाट देश में प्रयुक्त होने वाली एक 'लाटी' रीति का प्रादुर्भाव हुआ। बाद में **'भोज'** ने **'मालवी'** और **'अवन्तिका'** नामक दो अन्य रीतियों का अविष्कार किया। आचार्य विश्वनाथ रीति को काव्य का उपकारक मानते हैं। 'वक्रोक्तिजीवित' के लेखक कुन्तक ने रीति का खुलकर विरोध किया, आचार्य मम्मट उनके समर्थन में आये और रीति को वृत्तियों से जोड़ने की बात की। **'राजशेखर'** ने रीति को काव्य का **'बाह्य तत्व'** बताया। उनके अनुसार, – **'वाक्यविन्यासक्रमो रीतिः'**। किन्तु यह सब विरोध विद्वानों की आम सहमति नहीं पा सका और वामन के रीति सम्बन्धी विचारों को मान्यता मिली। **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** यह इनका प्रमुख सिद्धान्त है।

वामन ने 10 गुणों का वर्णन किया है -

1. ओज,
2. प्रसाद,
3. श्लेष,
4. समता,
5. कान्ति
6. समाधि
7. माधुर्य,
8. सौकुमार्य
9. उदारता
10. अर्थव्यक्ति

काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।
तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।। **(वामन)**

वामन ने इन दो सूत्रों को लिखकर गुण तथा अलङ्कारों का भेद प्रदर्शित करते हुए अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों के विशेष महत्व को प्रदर्शित किया है। मम्मटादि आचार्यों ने रीति की उपयोगिता स्वीकार की है किन्तु इसे काव्य की आत्मा स्वीकार नहीं किया है। उनके अनुसार रीतियों की स्थिति वैसी है जैसे शरीर में आँख, कान, नाक आदि अवयवों की-

''रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्।'' (मम्मट)

4. ध्वनिसम्प्रदाय – आनन्दवर्धन। (850 ई0)

रचना- ध्वन्यालोक (4 उद्योत)।

ध्वनि सिद्धान्त-

ध्वनि सिद्धान्त, भारतीय काव्यशास्त्र का एक सम्प्रदाय है। भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों में यह सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। ध्वनि सिद्धान्त का आधार **'अर्थ ध्वनि'** को माना गया है। इस सिद्धान्त की स्थापना का श्रेय **'आनंदवर्धन'** को है किन्तु अन्य सम्प्रदायों की तरह ध्वनि सिद्धान्त का जन्म आनंदवर्धन से पूर्व हो चुका था। स्वयं आनन्दवर्धन ने अपने पूर्ववर्ती विद्वानों का मतोल्लेख करते हुए कहा है कि-

"काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः"।

अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है ऐसा मेरे पूर्ववर्ती विद्वानों का भी मत हैं। आनंदवर्धन के पश्चात 'अभिनवगुप्त' ने 'ध्वन्यालोक' पर 'लोचन टीका' लिखकर ध्वनि सिद्धान्त का प्रबल समर्थन किया। आनन्दवर्धन और अभिनवगुप्त दोनों ने रस और ध्वनि का अटूट संबंध दिखाकर रस मत का ही समर्थन किया था। आन्नदवर्धन ने **'रस ध्वनि'** को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि माना हैं जबकि **'अभिनवगुप्त'** रस-ध्वनि को **'ध्वनित'** या **'अभिव्यंजित'** मानते हैं। परवर्ती आचार्य मम्मट ने ध्वनि विरोधी मुकुल भट्ट, महिम भट्ट, कुन्तक आदि की युक्तियों का सतर्क खंडन कर ध्वनि सिद्धान्त को प्रबलित किया। उन्होंने व्यंजना को काव्य के लिए अपरिहार्य माना इसीलिए उन्हें **'ध्वनि प्रतिष्ठापक परमाचार्य'** कहा जाता है। ध्वनि सिद्धान्त का आधार स्फोटवाद सिद्धान्त है काव्यशास्त्र में ध्वनि का संबंध 'व्यंजना शक्ति'से है। **''काव्यास्यात्मा ध्वनिः।''** आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य का आत्मा स्थानीय तत्व है - **प्रतीयमान।**

''प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्तु वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्र प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु।''

(ध्व. 1.4)

- इन सभी सम्प्रदायों में ध्वनि सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्वपूर्ण है। 'ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचर्य' - **मम्मट**
- ध्वनि काव्य की आत्मा है –
  "काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः"। (ध्व. 1-1)
- ध्वनि के तीन प्रकार- **वस्तु, अलंकार, रस।**
  ''एवं वस्त्वलंकार रसभेदेन त्रिधाध्वनिः।''

ध्वनिकार के मतानुसार जहां पर वाच्य अपने स्वरूप को तथा वाचक शब्द अपने अर्थ को गौण बनाकर व्यङ्ग्य अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्य विशेष को ध्वनि कहते हैं।

ध्वनिसम्प्रदाय के अन्य प्रमुख प्रवर्तकाचार्य-
रूय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ, इत्यादि।

5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय- कुन्तक। (10 वीं शती उत्तरार्द्ध)

रचना- वक्रोक्तिजीवितम् (4 उन्मेष)।

वक्रोक्ति सिद्धान्त-

वक्रोक्ति दो शब्दों 'वक्र' और 'उक्ति' की संधि से निर्मित शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है- ऐसी उक्ति जो सामान्य से अलग हो। टेढा कथन अर्थात जिसमें लक्षणा शब्द शक्ति हो। भामह ने वक्रोक्ति को एक अलंकार माना था। उनके परवर्ती कुन्तक ने वक्रोक्ति को एक सम्पूर्ण सिद्धान्त के रूप में विकसित कर काव्य के समस्त अंगों को इसमें समाविष्ट कर लिया। इसलिए कुन्तक को वक्रोक्ति संप्रदाय का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है।

ऐतिहासिक विकास-

वक्रोक्ति सिद्धान्त की प्रतिष्ठा तथा प्रतिपादन का श्रेय कुन्तक को है परन्तु इसकी परम्परा प्राचीन है। भामह के पूर्ववर्ती कवियों बाण, सुबन्धु आदि में इसके संदर्भ प्राप्त होते हैं।

भामह- भामह ने वक्रोक्ति का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। उन्होंने वक्रोक्ति में शब्द और अर्थ, दोनों का अंतर्भाव माना है। उन्होंने वक्रोक्ति तथा अतिशयोक्ति का समान अर्थ में प्रयोग किया है। अतिशयोक्ति का अर्थ है लोकातिक्रांत गोचरता। वक्रोक्ति को इसी कारण भामह मूल अलंकार मानते हैं। इसके बिना वाक्य काव्य न रहकर वार्ता मात्र रह जाता है।

दण्डी- दंडी ने भी वक्रोक्ति को भामह के समान महत्व दिया है। दंडी ने वांङ्मय के दो भेद बताये हैं- स्वाभावोक्ति तथा वक्रोक्ति। दंडी ने वक्रोक्ति तथा अतिशयोक्ति को समस्त अलंकारों के मूल में स्वीकार किया है। भामह और दंडी में केवल यह अंतर है कि भामह स्भावोक्ति को वक्रोक्ति की परिधि में स्वीकार करते हैं और दंडी उसे भिन्न मानते हुए वक्र कथन से कम महत्वपूर्ण समझते हैं।

आनन्दवर्धन- आनन्दवर्धन ने वक्रोक्ति की स्वतंत्र व्याख्या नहीं की है। उन्होंने इसे विशिष्ट अलंकार मानकर इसके सामान्य तथा व्यापक रूप को स्वीकार किया है। आनन्दवर्धन ने भामह के वक्रोक्ति संबंधी महत्व को स्वीकार करते हुए अतिशयोक्ति तथा वक्रोक्ति को पर्याय माना और सभी अलंकारों को अतिशयोक्ति गर्भित स्वीकार किया है।

अभिनवगुप्त- अभिनवगुप्त ने वक्रोक्ति के सामान्य रूप को स्वीकार किया है। इनके अनुसार शब्द और अर्थ की वक्रता का आशय उनकी लोकोत्तर स्थिति है तथा इस लोकोत्तर का अर्थ अतिशय ही है।

कुन्तक- वक्रोक्ति सिद्धांत के प्रवर्तक कुंतक ने अपने ग्रंथ वक्रोक्ति जीवितम् में वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा कहा है। उन्होंने वक्रोक्ति के अंतर्गत सभी काव्य सिद्धांतों का समाहार करते हुए समस्त काव्यांगों- वर्ण चमत्कार, शब्द सौंदर्य, विषयवस्तु की रमणीयता, अप्रस्तुत-विधान, प्रबंध कल्पना आदि को उचित स्थान दिया है। कुंतक के अनुसार वक्रोक्ति केवल वाक्-चातुर्य अथवा उक्ति चमत्कार नहीं है, वह कवि व्यापार अथवा कवि कौशल है। कुंतक, अलंकारशास्त्र के एक मौलिक विचारक विद्वान थे। ये **'अभिधावादी'** आचार्य थे जिनकी दृष्टि में अभिधा शक्ति ही कवि के अभीष्ट अर्थ के द्योतन के लिए सर्वथा समर्थ होती है। इनका काल निश्चित रूप से ज्ञात नहीं हैं। किंतु विभिन्न अलंकार ग्रंथों के अंत:साक्ष्य के आधार पर समझा जाता है कि ये दसवीं शती ई. के आसपास हुए होंगे।

कुन्तक अभिधा की सर्वातिशायिनी सत्ता स्वीकार करने वाले आचार्य थे। परंतु यह अभिधा संकीर्ण आद्या शब्दवृत्ति नहीं है। अभिधा के व्यापक क्षेत्र के भीतर लक्षणा और व्यंजना का भी अंतर्भाव पूर्ण रूप से हो जाता है। वाचक शब्द द्योतक तथा व्यंजक उभय प्रकार के शब्दों का उपलक्षण है। दोनों में समान धर्म अर्थप्रतीतिकारिता है। इसी प्रकार प्रत्येयत्व (ज्ञेयत्व) धर्म के सादृश्य से द्योत्य और व्यंग्य अर्थ भी उपचारदृष्ट्या वाच्य कहे जा सकते हैं।

उनकी एकमात्र रचना 'वक्रोक्तिजीवित' है जो अधूरी ही उपलब्ध हैं। वक्रोक्ति को वे काव्य का **'जीवित'** (जीवन, प्राण) मानते हैं। वक्रोक्तिजीवित में वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा माना गया है जिसका और आचार्यों ने खंडन किया है। पूरे ग्रंथ में वक्रोक्ति के स्वरूप तथा प्रकार का बड़ा ही प्रौढ़ तथा पांडित्यपूर्ण विवेचन है। वक्रोक्ति का अर्थ है **वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभंगीभणितिरुच्यते। (वक्रोक्तिजीवित 1.10)**
कविकर्म की कुशलता का नाम है वैदग्ध्य या विदग्धता। भंगी का अर्थ है - विच्छित, चमत्कार या चारुता। भणिति से तात्पर्य है - कथन प्रकार। इस प्रकार वक्रोक्ति का अभिप्राय है कविकर्म की कुशलता से उत्पन्न होनेवाले चमत्कार के ऊपर आश्रित रहनेवाला कथनप्रकार। कुंतक का सर्वाधिक आग्रह कविकौशल या कविव्यापार पर है अर्थात् इनकी दृष्टि में काव्य कवि के प्रतिभाव्यापार का सद्य:प्रसूत फल हैं। काव्य में वक्रोक्ति का मूल्य 'भामह' ने भी स्वीकार किया है-

''सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनथार्यो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोनयाविना।।''
(भामह काव्यालङ्कार 2.5)

दण्डी -''भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्''
(काव्यादर्श 2-363)

वामन - ''सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः।'' (काव्यालङ्कारसूत्र 4-3-8,)
कुन्तक ने वक्रोक्ति सिद्धान्त पर वक्रोक्तिजीवित नामक ग्रन्थ लिखा। कुन्तक ने वामन के **'रीति'** के स्थान पर **'मार्ग'** शब्द का प्रयोग किया है। वामन की **'वैदर्भी'** रीति को कुन्तक 'सुकुमारमार्ग' कहते हैं। **'गौड़ी'** -'विचित्रमार्ग' **'पाञ्चाली'** -'मध्यममार्ग' ।

6. औचित्य सम्प्रदाय- क्षेमेन्द्र। (11वीं शती)

रचना- औचित्यविचारचर्चा।

औचित्य सिद्धान्त-

औचित्य संप्रदाय के प्रतिष्ठाता क्षेमेन्द्र (11वीं शताब्दी का मध्यकाल) ने भरत, आनन्दवर्धन आदि प्राचीन आचार्यों के मत को ग्रहण कर काव्य में औचित्य तत्व को प्रमुख तत्व अंगीकार किया तथा इसे स्वतंत्र संप्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित किया। अलंकारशास्त्र इस प्रकार लगभग दो सहस्त्र वर्षों से काव्यतत्वों की समीक्षा करता आ रहा है।

औचित्य - ''उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते।।''

अनौचित्य रसभङ्ग का कारण तथा औचित्य इसका परम रहस्य -

"अनौचित्यहते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।
प्रसिद्धौचित्यबन्धस्तु रसस्योपनिषत्परा।।"

क्षेमेन्द्र के उपलब्ध ग्रन्थों में **"औचित्यविचारचर्चा"** का ही अलङ्कारशास्त्र के साथ विशेषरूप से सम्बन्ध माना जा सकता है। इसी कारण उनकी गणना आलङ्कारिक आचार्यों में की जाती है। उन्होंने औचित्य को रस का भी प्राण कहा है-

"औचित्यस्य चमत्कारकारिणश्चारुचर्वणे।
रसजीवितभूतस्य विचारं कुरुतेऽधुना।।"

पाश्चात्य काव्यशास्त्र -

1. अरस्तु

'अरस्तू' (384-322 ई.पू.), एक **'ग्रीक'** दार्शनिक थे। वें दुनिया के बड़े विचारकों में से एक थे। उनके लेखन के घेरे में विचारों के सभी क्षेत्र शामिल है। अरस्तू का मानना था कि पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में है और केवल चार तत्वों से बनी है: मिटटी, जल, वायु, और अग्नि। उनके मतानुसार सूरज, चाँद और सितारों जैसे खगोलीय पिंड परिपूर्ण और ईश्वरीय है और सारे पांचवें तत्व से बने है जिसे वें ईश्वर कहते थे। अरस्तु के जीवन पर **'मकदूनिया'** के दरवार का काफी गहरा प्रभाव पड़ा था। 347 ईस्वी पूर्व में प्लेटो के निधन के बाद अरस्तु ही अकादमी के नेतृत्व के अधिकारी थे किन्तु प्लेटो के शिक्षाओं से अलग होने के कारण उन्हें यह अवसर नही दिया गया। **'एत्रानियस'** के मित्र शाषक **'ह्मियाज'** के निमत्रण पर अरस्तु उनके दरवार में चले गये। वो वहा पर तीन वर्ष रहे और इस दौरान उन्होंने राजा की भतीजी **ह्मिलिस** नामक महिला से विवाह कर लिया। अरस्तु की ये दूसरी पत्नी थी उससे पहले उन्होंने **'पिथियस'** नामक महिला से विवाह किया था जिसकी मौत के बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया था।

शिक्षा-

पिता की मौत के बाद 17 वर्षीय अरस्तु को उनके अभिभावक ने शिक्षा पूरी करने के लिए बौद्धिक शिक्षा केंद्र **एथेंस** भेज दिया। वह वहां पर बीस वर्षो तक प्लेटो से शिक्षा पाते रहे। पढ़ाई के अंतिम वर्षो में वो स्वयं अकादमी में पढ़ाने लगे। अरस्तु को उस समय का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था जिसके प्रशंसा स्वयं उनके गुरु भी करते थे। अरस्तु की गिनती उन महान दार्शनिकों में होती है जो पहले इस तरह के व्यक्ति थे और परम्पराओं पर भरोसा न कर किसी भी घटना की जाँच के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचते थे।

अरस्तु और दर्शन-

अरस्तु को खोज करना बड़ा अच्छा लगता था खासकर ऐसे विषयों पर जो मानव स्वभाव से जुड़े हों जैसे कि "आदमी को जब भी समस्या आती है वो किस तरह से इनका सामना करता है?" और "आदमी का दिमाग किस तरह से काम करता है।" समाज को लोगों से जोड़े रखने के लिए काम करने वाले प्रशासन में क्या ऐसा होना चाहिए जो सर्वदा उचित तरीके से काम करें। ऐसे प्रश्नों के उतर पाने के लिए अरस्तु अपने आस पास के माहौल पर प्रायोगिक रुख रखते हुए बड़े इत्मिनान के साथ काम करते रहते थे। वो अपने शिष्यों को सुबह सुबह विस्तृत रूप से और शाम को आम लोगों को साधारण भाषा में प्रवचन देते थे। **'एलेक्सेंडर'** की अचानक मृत्यु पर मकदूनिया के विरोध के स्वर उठ खड़े हुए। उन पर नास्तिकता का भी आरोप लगाया गया। वो दंड से बचने के लिये 'चल्सिस' चले गये और वहीं पर एलेक्सेंडर की मौत के एक साल बाद 62 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गयी।

सिकंदर की शिक्षा-

मकदूनिया के राजा **'फिलिप'** के निमत्रण पर वो उनके तेरह वर्षीय पुत्र को पढाने लगे । पिता-पुत्र दोनों ही अरस्तु को बड़ा सम्मान देते थे । लोग यहा तक कहते थे कि अरस्तु को शाही दरबार से काफी धन मिलता है और हजारो गुलाम उनकी सेवा में रहते है हालंकि ये सब बाते निराधार थी । एलेग्जेंडर के राजा बनने के बाद अरस्तु का काम खत्म हो गया और वो वापस एथेंस आ गये । अरस्तु ने **प्लेटोनिक स्कूल** और **प्लेटोवाद** की स्थापना की । अरस्तु अक्सर प्रवचन देते समय टहलते रहते थे इसलिए कुछ समय बाद उनके अनुयायी **पेरीपेटेटिक्स** कहलाने लगे ।

कृतियाँ-

अरस्तु ने कई ग्रथों की रचना की थी , लेकिन इनमे से कुछ ही अब तक सुरक्षित रह पाये हैं । सुरक्षित लेखों की सूची इस प्रकार है-

1. पोलिटिक्स
2. निकोमर्चे एथिक्स
3. यूदेमियन एथिक्स
4. रहेतोरिक
5. पोएटिक्स
6. मेटाफिजिक्स
7. प्रोब्लेम्स
8. हिस्ट्री ऑफ़ एनिमल्स
9. पार्ह्स ऑफ़ एनिमल्स
10. मूवमेंट ऑफ़ एनिमल्स
11. प्रोग्रेशन ऑफ़ एनिमल्स
12. जनरेशन ऑफ़ एनिमल्स
13. सेंस एंड सेंसिबिलिया
14. ऑन मेमोरी
15. ऑन स्लीप
16. ऑन ड्रीम्स
17. ऑन दिविनेशन इन स्लीप
18. मेतेरोलोजी
19. ऑन यूथ
20. ओल्ड ऐज
21. लाइफ एंड डेथ एंड रेसिपिरेशन
22. फिजिक्स